INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF MANAGEMENT SOCIOLOGY & HUMANITIES

ISSN 2277 – 9809 (online)
ISSN 2348 - 9359 (Print)

An Internationally Indexed Peer Reviewed & Refereed Journal

www.IRJMSH.com
www.isarasolutions.com

Published by iSaRa Solutions

कोरोना संकट, कलाकार और राज्य ललित कला अकादमी उ० प्र० द्वारा प्रदत्त मंच: एक समीक्षा

अंकिता सिंह
सहायक आचार्य
यू०पी०आई०डी०आर०, लखनऊ

डॉ० सचिव गौतम
सहायक आचार्य
देव भूमि उत्तराखंड विश्वविद्यालय, देहरादून

सारांश : राज्य ललित कला अकादमी, उत्तर प्रदेश का अपना एक स्थायी कला संग्रह है। जो दृश्यकला के छेत्र में कार्य कर रहे कलाकार को समय-समय पर अकादमी द्वारा अपने विविध कार्यक्रम के माध्यम से प्रोत्साहन एवं सहयोग प्रदान किया जाता है, जिसके प्रतिफल के रूप में प्रदेश की अनेक प्रतिभाओं ने राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय कला परिदृष्य में अपनी सशक्त उपस्थिति दर्ज कराई है एवं कुछ कलाकार वर्तमान में करा रहे हैं। आज देश के सभी क्षेत्रों में उत्तर प्रदेश के कलाकार शिक्षण स्वतंत्र सृजन एवं लेखन का कार्य कर रहे हैं। कोविड-19 महामारी ने ललित कला अकादमी सहित विश्व भर में सांस्कृतिक संस्थाओं को काफी प्रभावित किया है। जिसने महामारी के दौरान कला को बढ़ावा देने के लिए ऑनलाइन माध्यमों का सक्रिय रूप से उपयोग किया।

कोविड- 19 महामारी के उपप्रांत कलाकारों को प्रोत्साहन एवं आर्थिक सहयोग प्रदान करने के लिए संस्कृति विभाग से अधिनस्थ एकाई राज्य ललित कला अकादमी, उ.प्र. द्वारा विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। कलाकारों ने अपनी कला के माध्यम से महामारी से संबंधित विभिन्न दिए गए संदेश, जैसे स्वतंत्रता का महत्व, कोरोना योद्धाओं का सम्मान, और धैर्य और एकजुटता का आह्वान। लोक कलाकारों ने अपनी पारंपरिक कला विधाओं का उपयोग कर कोविड-19 के उपचार और मुक्ति का चित्रण किया है।ललित कला अकादमी ने "कोरोना को संदर्भ में समाज को सकारात्मक संदेश देने वाले रचना" के लिए अखिल भारतीय चित्रकला प्रतियोगिताएं भी आयोजित कीं। इन टुकड़ों को विभिन्न स्वतंत्र कलाकारों (जूनियर, सीनियर, कलाकार) में विभाजित किया।

यह प्रदर्शनी महामारी के समय में समाज को एकजुट करने और सकारात्मक संदेश फैलाने में सहायक रही। ऑफ़लाइन प्रदर्शनियों और कला कार्यक्रमों ने लोगों को घर बैठे मनोरंजन प्रदान किया और कला समुदाय से जुड़े रहने का अवसर दिया, अनिश्चितता, तनाव और अकेलेपन के माहौल में कला ने लोगों को सामान्य सहारा दिया। महामारी ने कला जगत को डिजिटल माध्यमों को अपनाने और नवाचार करने के लिए प्रेरित किया। । नए माध्यमों और तकनीकों के साथ कलाकार कलाकारों को प्रयोग करने के लिए भी प्रेरित किया।

बीज शब्द: ललित कला अकादमी,कोविड-19,कलाकारों की अभिव्यक्ति ,डिजिटल प्रदर्शन ,मूल्यांकन

परिचय: कोरोना महामारी का काल मानव इतिहास के सबसे चुनौतीपूर्ण अध्यायों में से एक रहा है। इसने न केवल स्वास्थ्य और अर्थव्यवस्था को प्रभावित किया, बल्कि कला और संस्कृति की जीवंत दुनिया को भी पूरी तरह से स्तब्ध कर दिया। लॉकडाउन के कारण कला दीर्घाएँ (Art Galleries) बंद हो गईं और सभी प्रस्तावित प्रदर्शनियाँ अनिश्चित काल के लिए टल गईं। इससे कलाकारों के सामने न केवल पहचान का संकट खड़ा हुआ, बल्कि उनकी आजीविका

पर भी गहरी चोट पहुँची। एक कलाकार के लिए संवाद और प्रदर्शन उसकी कला की आत्मा होते हैं, जो भौतिक रूप से पूरी तरह बंद हो चुके थे।

इस संकट के समय में राज्य ललितकला अकादमी, उत्तर प्रदेश ने कलाकारों के लिए एक संबल और मंच के रूप में जो भूमिका निभाई, वह कला जगत में एक महत्वपूर्ण विमर्श का विषय है।राज्य ललित कला अकादमी, उत्तर प्रदेश की स्थापना 8 फरवरी 1962 को उत्तर प्रदेश शासन के संस्कृति विभाग की पूर्णता वित्त पोषित स्वायतशायी इकाई के रूप में हुई थी| अकादमी कला एवं कलाकारों की प्रोन्नति एवं प्रोत्साहन के लिए निरंतर अग्रसर होती हुई कला जगत के लिए उल्लेखनिया कार्य कर रही है । डॉ संपूर्णानंद(मुख्यमंत्री, उत्तर प्रदेश) इसके पहले अध्यक्ष थे। अकादमी का मुख्यालय लखनऊ में कैसरबाग के ललित कला अकादमी मार्ग पर लाल बारादरी भवन में स्थित है। यह भवन एक पुरातन इमारत है, इसका निर्माण 1778 - 1814 के बीच हुआ।

राज्य ललित कला अकादमी, उत्तर प्रदेश के कार्यक्रमों की रूपरेखा में, दृश्य कला के सभी कलाकारों की भागीदारी सुनिश्चित करने एवं दृश्य कला के सभी विधाओं को सम्मिलित करते हुए क्षेत्र, राज्य स्तरिये तथा राष्ट्रीय स्तर पर प्रतिसप्रधा मंच प्रदान करने के अवसर उपलब्ध हैं। युवा पीढी के लिये अकादमी द्वारा कराए गए विभिन्न प्रकाशन उपलब्ध हैं। प्रदेश के ख्याति प्राप्त कलाकारों के जीवन वृत्त, मोनोग्राफ, कला पत्रिका, पुनरुत्पादन, विविध विषयों पर विशेषांक के साथ-साथ अकादमी द्वारा गोष्ठी एवं सेमिनार के आलेखों को भी समय-समय पर प्रकाश किया जाता है।

राज्य ललित कला अकादेमी, लखनऊ, उत्तर प्रदेश

अकादमी की योजनाओं का स्वरूप इस तरह से बनाया गया है कि जिसके माध्यम से युवाओं को प्रोत्साहित करने के साथ - साथ वरिष्ठ कलाकारों को भी सम्मान एवं सहयोग प्रदान किया जा सके । कला में रुचि रखने वाले छात्र-छात्राओं के लिए अल्पकालिक कला प्रशिक्षण एवं प्रतियोगिताएं आयोजित की जाती हैं| अकादमी में कला के अध्येताओं, कला समीक्षकों को कला की संदर्भ सामग्री उपलब्ध कराने के उद्देश्य से पुस्तकालय की स्थापना की गयी है। इसमें भारतीय कला की पुस्तकों के साथ विदेशी कला साहित्य भी उपलब्ध है। कला विषयक फिल्में और पारदर्शियां भी संग्रहीत की गयी हैं। अकादमी द्वारा दृश्य एवं लोक कला के क्षेत्र में विशेष शोध करने हेतु कलाकारों एवं शोधार्थियों को 1 वर्षीय छात्रवृत्ति की सुविधा भी प्रदान की जाती है| कला संग्रह के अंतर्गत अकादमी में चित्र, मूर्ति ,ग्राफिक एवं रेखांकन ,छायाचित्र आदि के रूप में कई उत्कृष्ट समकालीन कलाकृतियां भी संग्रहित है|

साहित्य समीक्षा

कलाकारों की अभिव्यक्ति और कोरोना संकट हम इन विरोधाभासों का पता लगाने के लिए विभिन्न साहित्य की समीक्षा करते हैं,जिसमें कलाकारों दर्शकों और कला व्यवहार में किस तरह से बदलाव आया और क्या इस तरह के बदलाव हमारे समाज में लगातार बने रहने के संकेत दे रहे हैं, कला ने महामारी के दौरान लोगों की कैसे और क्यों मदद की, और कला और सांस्कृतिक क्षेत्र में काम करने वाले लोग कैसे प्रभावित हुए हैं। इस रिपोर्ट में निष्कर्ष द्वितीयक स्रोतों और इस रिपोर्ट के साथ कमीशन किए गए प्राथमिक अनुभवजन्य शोध से आते हैं|

एलेक्जेंड्रा ब्रैडबरी के अनुसार: यह रिपोर्ट कोविड-19 महामारी के दौरान कला की जटिल भूमिका की जांच करती है। मार्च 2020 से बार-बार लॉकडाउन, सामाजिक दूरी, रोग नियंत्रण प्रतिबंध और अन्य दिशा-निर्देशों ने कला और गतिविधियों सांस्कृतिक क्षेत्र में विरोधाभासों और चुनौतियों की एक श्रृंखला पेश की। एक ओर, आयोजन स्थल बंद होने, ऑनलाइन कला और सांस्कृतिक समूहों और स्ट्रीम किए गए प्रदर्शनों सहित घर-आधारित कला जुड़ाव के लिए नए अवसर भी प्रदान किए। जैसे-जैसे महामारी 2020 के अंत से 2021 तक लंबी होती गई, जुड़ाव और सामाजिक रूप से दूर रहने वाले जुड़ाव के हाइब्रिड मॉडल सामने आए और जुलाई 2021 से समाज के फिर से खुलने से सांस्कृतिक उद्योगों को और अधिक स्वतंत्रता मिली है। हालाँकि, इसे फिर से खुलने से यह भी उजागर हुआ है कि अगर कोविड के बाद की दुनिया में कला और सांस्कृतिक क्षेत्र को टिकाऊ होना है तो उसे विकसित होने और अनुकूलन करने की आवश्यकता है|

जोआओ पेड्रो अमोरिम1 और लुइस टेक्सेरा (2020): महामारी के कारण कला और संस्कृति सबसे अधिक प्रभावित गतिविधियों में से हैं, क्योंकि संग्रहालय बंद हो गए, सिनेमाघर खाली हो गए, संगीत कार्यक्रम रद्द कर दिए गए। कुछ कला रूपों ने आसानी से डिजिटल को अपना लिया है। दूसरी ओर समकालीन कला को प्रदर्शनियों या कलाकृतियों के अनुभव के लिए डिजिटल विकल्प प्रदान करने के लिए अधिक जटिल चुनौतियों का सामना करना पड़ता है, खासकर अगर हम पेंटिंग और मूर्तिकला के सबसे पारंपरिक मीडिया पर विचार करें। डिजिटल रूप से प्रदर्शनियों को पुन: पेश करने के लिए तकनीकी बुनियादी ढाँचा और जानकारी कुछ वर्षों से उपलब्ध है, भले ही समान रूप से न हो। कला स्थलों के बड़े पैमाने पर बंद होने से कई संस्थानों को अपनी ऑनलाइन उपस्थिति में अधिक निवेश करने के लिए प्रेरित किया। अपने दर्शकों के साथ जुड़ने की इच्छा और यह तथ्य कि दृश्यता की हमारी वर्तमान अर्थव्यवस्था मात्रात्मक मूल्यांकन पर आधारित है - आगंतुकों की संख्या, विचारों की संख्या, आदि और निष्क्रियता और चुप्पी को दंडित करती है, ने कई कलाकारों को डिजिटल प्रस्तुति के लिए अपनी गतिविधि को फिर से तैयार करने के लिए प्रेरित किया।

माक, हेई वान (2021) कोविड-19 : महामारी के दौरान, घर-आधारित कला में संलग्नता कई व्यक्तियों के लिए सामाजिक अलगाव और भावनात्मक संकट का सामना करने के लिए एक महत्वपूर्ण सामंजस्य रणनीति के रूप में उभरी। चार प्रमुख प्रकार की संलग्नता सामान्यतः देखी गई- डिजिटल कला व लेखन, संगीत गतिविधियाँ, शिल्प, और आनंद के लिए पढ़ाई। शोध से पता चलता है कि उम्र, शैक्षिक योग्यता, सामाजिक समर्थन, और सामंजस्य शैलियाँ इन गतिविधियों में भागीदारी के सबसे मजबूत भविष्यवक्ता थे। विशेष रूप से, युवा वयस्क (18-29), गैर-कामकाजी, जिनके पास अधिक सामाजिक समर्थन था, और जो नौकरी गंवाने या वायरस के बारे में चिंता का सामना कर रहे थे, वे लॉकडाउन के दौरान अपनी कला में संलग्नता बढ़ाने की अधिक संभावना रखते थे। ये गतिविधियाँ दोतरफा सामंजस्य रणनीतियों के रूप में कार्य करती थीं, जिससे व्यक्तियों को भावनाओं और तनाव का प्रबंधन करने में मदद मिली, साथ ही आत्म-निवेदन और व्यक्तिगत विकास को भी बढ़ावा मिला।

टेट मॉडर्न लंदन: में स्थित एक समकालीन और आधुनिक कला संग्रहालय है और 2018 में 5.9 मिलियन आगंतुकों के साथ यूनाइटेड किंगडम में सबसे अधिक दौरा किया जाने वाला संग्रहालय था। COVID-19 के आने से पहले ही टेट मॉडर्न की एक मजबूत डिजिटल उपस्थिति थी। उनकी वेबसाइट पर मल्टीमीडिया सामग्रियों की एक विस्तृत श्रृंखला है। वर्षों से, अपने प्लेटफ़ॉर्म पर उन्होंने दृश्य-श्रव्य निबंध, प्रलेखन वीडियो और तस्वीरें, आगे पढ़ने के लिए लेख, पॉडकास्ट, साक्षात्कार, 360° वीडियो निर्देशित पर्यटन और अन्य सामग्री साझा की है। उनके बंद होने से पहले - जो मार्च के मध्य से 27 जुलाई तक चला - टेट मॉडर्न में कारा वॉकर, स्टीव मैकक्वीन, एंडी वाहरोल और डोरा मौरर द्वारा चार चल रही अस्थायी प्रदर्शनियाँ थीं, जिनमें से सभी को बढ़ा दिया गया था

एलिजाबेथ थॉमस 30 Aug 2021: के अनुसार केरल में कलाकार महामारी के कारण कठिनाइयों के बावजूद कला सृजन जारी रख रहे हैं, कोविड-19 ने केरल में कला बिरादरी को कला को देखने और बनाने के तरीके को बदलने के लिए प्रोत्साहित किया है। कलाकार कहते हैं, "कोविड-19 महामारी के बाद काम के ऑर्डर कम होने लगे। जब केरल

ने मार्च 2020 में नोवेल कोरोनावायरस के प्रसार को रोकने के लिए पहला लॉकडाउन घोषित किया, तो केरल के कलाकार समुदाय को इस बात का बिल्कुल भी अंदाज़ा नहीं था कि यह एक लंबी और अनिश्चित यात्रा होगी। कई दिन और हफ़्ते बीत गए, लेकिन यात्रा या कार्यक्रमों के फिर से शुरू होने का कोई संकेत नहीं मिला, कला दीर्घाओं को फिर से खोलने की तो बात ही छोड़िए। हर दूसरे क्षेत्र की तरह, लॉकडाउन और उससे जुड़ी पाबंदियों ने कला जगत के लिए भी दुविधा पैदा कर दी।

कोच्चि के कलाकार हुसैन कोठारथ कहते हैं कि वे लॉकडाउन में इसलिए बच पाए क्योंकि राज्य सरकार ने उन्हें हर महीने राशन किट मुहैया कराई थी। वे कहते हैं, "हम कई महीनों तक काम के लिए बाहर नहीं जा पाए।" वे और उनके भाई हसन, जो पूर्णकालिक कलाकार हैं, ने ज़्यादा से ज़्यादा कला बनाने में समय लगाया और उन्हें सोशल मीडिया प्लेटफ़ॉर्म पर पोस्ट किया। उन्होंने केरल ललितकला अकादमी द्वारा आयोजित 10-दिवसीय वर्क फ्रॉम होम आर्ट कैंप में भी हिस्सा लिया। उनकी कृतियाँ कोविड-19 के अनुभवों को दर्शाती हैं। हसन के काम का शीर्षक 'लॉकडाउन' है जबकि हुसैन के काम का नाम 'महामारी की यादें' है।

केरल ललित कला अकादमी ने महामारी के दौरान कलाकारों की मदद के लिए दो बड़े कार्यक्रम - 'निराकेरलम' और 'शिल्पकेरलम' शुरू किए। अकादमी ने कलाकारों को कला सामग्री के साथ पारिश्रमिक भी दिया। अकादमी के अध्यक्ष नेमोम पुष्पराज कहते हैं, "इसका मानदंड उन कलाकारों को चुनना था जिनके पास आय का कोई स्रोत नहीं है, खासकर जिन्हें कोई सरकारी सहायता या पेंशन नहीं मिलती है। कलाकार घर से काम कर सकते हैं।" केरल ललितकला अकादमी अपने संग्रहित कार्यों की स्थायी ऑनलाइन प्रदर्शनी भी आयोजित कर रही है। अकादमी ने इस समय का उपयोग अपने संग्रहित कार्यों को डिजिटल बनाने में भी किया है। उन्होंने आगे कहा, "'निराकेरलम' के पहले चरण में 105 कलाकार शामिल थे, जिनमें से प्रत्येक को 27,000 रुपये का पारिश्रमिक, 4x3 इंच का कैनवास और अन्य सामग्री दी गई थी।

राज्य ललित कला अकादमी, उ.प्र. के अध्यक्ष कहते हैं कि लॉकडाउन के दौरन विभिन्न छायाकारो द्वारा अपने कैमरे के माध्यम से उक्त महत्वपूर्ण क्षणों को छायांकित किया जाता रहा कोरोना त्रासदी के संघर्ष में कोरोना योद्धाओं के योगदान के साकारात्मक क्षण / छायाचित्रों को जन जन तक पहुंचाना अवश्यक था।

उद्देश्य

कोविड- 19 महामारी के उपप्रांत कलाकारों को प्रोत्साहन एवं आर्थिक सहयोग प्रदान करने के लिए संस्कृति विभाग से अधिनस्थ एकाई राज्य ललित कला अकादमी, उ.प्र. द्वारा विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। अकादमी की स्थापना दृश्यकलाओं एवं व्यावहारिक कलाओं की गतिविधियों एवं कलाकारों को प्रोत्साहन एवं सहयोग प्रदान करने के उद्देश्य से हुई। चित्रकला, मूर्तिकला, वास्तुकला और लोककला के क्षेत्र में अध्ययन और अनुसंधान को प्रोत्साहन उनके उन्नयन के लिए कलाकार और कला संघो के बीच बढ़ावा देना और ऐसे कला संघो की स्थापना और विकास को प्रोत्साहन देना। दृश्य कला पर साहित्य के प्रकाशन को बढ़ावा देने के लिए, जिसमें मोनोग्राफ, जर्नल, आर्ट एल्बम आदि शामिल है। चित्रो के साथ-साथ आधुनिक मूर्तियों की वीथिका स्थापित करना। चित्रो और मूर्तियों की प्रदर्शिनियो के अयोजन के साथ उनकी बिक्री के लिए प्रयास करना, कला पर लोकप्रिये व्याखान अयोजित करना ,योग्य कलाकारो को छात्रवृत्ति और पुरस्कार देना राज्य ललित कला अकादमी, यूपी का कला संग्रह जहां समृद्ध है वही अनूठा भी है क्यूकी इस संग्रह में प्रदेश आधार स्तम्भ कलाकारो के साथ ही देश के अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त कलाकारो का कृतित्व भी सम्मिलित है। इन कृतियों को शोध के छात्र एवं युवा पीढ़ी के कलाकारो के प्रेरणार्थ अकादमी में प्रतिमाह प्रदर्शन करने के साथ प्रदेश के विभिन्न महाविद्यालयो\कॉलेज\संस्थाओं के सहयोग से अन्यत्र भी प्रदर्शित किया जाता है। अकादमी में प्रदेश के येसे ही अनेक साधक कलाकारो की कृतियाँ संगृहीत है, जिन्हे जन समान्य के अवलोकनार्थ प्रदर्शित किया जाता है जिसे समाज एक लभनवित हो सके।

छात्रवृत्ति / वित्तीय सहायता : छात्रवृत्ति उन प्रतिभाशाली कलाकारों को दी जाती है जिन्होंने दृश्य कला में स्नातक किया है और वरिष्ठ कलाकारों के मार्गदर्शन में दृश्य कला की किसी विशिष्ट शाखा में विशेषज्ञता हासिल करने में रुचि रखते हैं। राज्य ललित कला अकादमी, उत्तर प्रदेश ऐसे कलाकारों से निर्धारित प्रारूप पर आवेदन आमंत्रित करती है। 12 चयनित कलाकारों को एक वर्ष के लिए 5000/- रुपये प्रति माह की दर से छात्रवृत्ति दी जाती है। चयन अकादमी के नियमों के अनुसार इस उद्देश्य के लिए गठित समिति की सिफारिशों पर किया जाता है। राज्य के होनहार युवा कलाकारों को अपनी प्रतिभा दिखाने के लिए प्रोत्साहित करने के लिए वित्तीय सहायता प्रदान की जाती है। हर साल कलाकारों के बायोडाटा और चयनित कृतियों की तस्वीरों के साथ आवेदन आमंत्रित किए जाते हैं। इसके लिए गठित समिति द्वारा चयन किया जाता है और वित्तीय सहायता के लिए 10 कलाकारों का चयन किया जाता है। चयनित कलाकारों को उनकी प्रदर्शनी आयोजित करने के लिए 10,000 रुपये की वित्तीय सहायता दी जाती है।

उत्तर प्रदेश राज्य ललित कला अकादमी की प्रमुख गतिविधियाँ

जिनमें से ये प्रमुख गतिविधिया राज्य ललित कला अकादमी द्वारा समय-समय की जाती है: 30 राष्ट्रीय/अखिल भारतीय स्तर के आयोजन, 10 अखिल भारतीय, 50 राज्य स्तरीय प्रतिनिधि शिविर/प्रतियोगिताएँ, 75 राज्य स्तरीय आयोजन, 50 क्षेत्रीय स्तर के आयोजन और उत्तर प्रदेश राज्य के लिए वार्षिक कला प्रदर्शनी और पुरस्कार वितरण -

- हर तीन साल में अखिल भारतीय कला प्रदर्शनी और पुरस्कार वितरण
- अखिल भारतीय फोटोग्राफी कला प्रदर्शनी और पुरस्कार वितरण
- क्षेत्रीय कला प्रदर्शनी और क्षेत्रीय पुरस्कार वितरण
- प्रतिष्ठित कलाकारों की पूर्वव्यापी कला प्रदर्शनी
- आमंत्रित कला प्रदर्शनियाँ
- समय-समय पर राष्ट्रीय, अंतर्राष्ट्रीय और अंतर-क्षेत्रीय कला प्रदर्शनियों का आयोजन
- अंतर-राज्यीय विनिमय कला प्रदर्शनियों का आयोजन
- कला प्रदर्शनियों के आयोजन के लिए वित्तीय सहायता
- दृश्य कला में उच्च शिक्षा के लिए प्रतिभाशाली कलाकारों के लिए छात्रवृत्ति
- डॉ. राधाकमल मुखर्जी स्मारक व्याख्यान श्रृंखला का आयोजन
- व्याख्यान, सेमिनार और कला संगोष्ठियाँ
- अखिल भारतीय और राज्य स्तरीय कला शिविरों का आयोजन।
- स्थायी कला संग्रह के लिए कलाकृतियों की खरीद
- कला पुस्तकालय और वाचनालय की सुविधा
- कला से संबंधित पुस्तकों, पत्रिकाओं, मोनोग्राफ, पोर्टफोलियो, चित्र पोस्टकार्ड आदि का प्रकाशन।

कोविड-19 महामारी के दौरान की गई "ऑनलाइन कला" प्रदर्शनियाँ

माननीय मंत्री ,संस्कृति विभाग, उत्तर प्रदेश की परिकल्पना को साकार करते हुए राज्य ललित कला अकादमी उत्तर प्रदेश द्वारा लॉकडाउन के चलते अखिल भारतीय "कोरोना वॉरियर्स" छायाचित्र प्रदर्शनी को ऑनलाइन माध्यम से आयोजित करने का निर्णय लिया गया। उत्कृष्ट छायांकन के लिए 20 - 20 के 10 पुरस्कारों को दिए जाने का निश्चय किया गया। संपूर्ण भारत से एक अकादमी द्वार 10 जून से 20 जुलाई 2020 तक ऑनलाइन (ई -मेल माध्यम से) प्रविष्टियां प्राप्त की। भारत के आंचलों से 88 छायाकारो से कुल 250 छायाचित्र प्रविष्ट के रूप में प्राप्त हुए हैं। राज्य ललित कला अकादमी, उत्तर प्रदेश एवं छत्रपति शाहूजी महाराज विश्वविद्यालय के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित राष्ट्रीय टेराकोटा मूर्तिशिल्प कार्यशाला दिनांक 16 से 20 मार्च, 2020 तक इंस्टीट्यूट आफ फाईन आर्ट्स. कानपुर में में सम्पन्न हुआ, मूर्तिकला के द्वारा कोरोना वायरस से बचने का दिया संदेश दिया गया।

महामारी के दौरान ऑनलाइन कला परियोजनाओं के कुछ उदाहरण -

राष्ट्रीय वेबिनार, बरेली

समाज जागरण में ललित कला एवं कलाकारों की भूमिका कोरोना महामारी के विशेष संदर्भ में राष्ट्रीय वेबिनार का आयोजन 28 अप्रैल, 2020 को बरेली में किया गया।

राष्ट्रीय वेबिनार, अलीगढ़

'कोविड-19 लॉकडाउन और उसके पश्चात तनाव दूर करने में कला और संगीत की भूमिका राष्ट्रीय वेबिनार का आयोजन अलीगढ़ में दिनांक 21 व 22 मई, 2020 को किया गया।

राष्ट्रीय वेबिनार, मुरादाबाद

समाज जागरण में भारतीय संस्कृति, ललित कला एवं शिक्षकों की भूमिका कोविड-19 विशेष सन्दर्भ में" राष्ट्रीय वेबिनार का आयोजन दिनांक 08 व 09 जून, 2020 को मुरादाबाद में किया गया।

मुख्य प्रस्तावित कार्यक्रम

- अखिल भारतीय कला प्रदर्शनी कोविड-19 (प्रक्रियाबद्ध माह अप्रैल-2020)
- अखिल भारतीय फोटोग्राफी प्रदर्शनी "कोरोना वारियर्स (प्रक्रियाबद्ध माह जून-2020)
- बदलता पर्यावरण विषयक पर आधारित प्रतियोगिता / प्रदर्शनी का प्रदेश के 6 क्षेत्रों काशी, अवध, गोरखपुर, कानपुर, मेरठ व बरेली में आयोजन। (प्रक्रियाबद्ध माह जून-2020)
- सोलहवीं अखिल भारतीय छायाचित्र कला प्रदर्शनी।
- 34वीं राज्य स्तरीय वार्षिक कला प्रदर्शनी।
- राज्य ललित कला अकादमी, उत्तर प्रदेश के वाराणसी में एक क्षेत्रीय केन्द्र की स्थापना की कार्यवाही प्रचलन में है।
- सन्यास से औद्योगिक क्रान्ति विषयक अखिल भारतीय चित्रकला शिविर/प्रतियोगिता का आयोजन। (दिनांक 11 से 15 जुलाई 2020)

ललित कला अकादमी द्वारा प्रदत्त मंच का मूल्यांकन

कोविड-19 महामारी के उपरान्त कलाकारों को प्रोत्साहित एवं आर्थिक सहयोग प्रदान करने के उद्देश्य से संस्कृति विभाग की अधीनस्थ इकाई राज्य ललित कला अकादमी, उ.प्र. द्वारा विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन किया गया।अकादमी द्वारा आयोजित की गई कार्यशालाओं, प्रतियोगिताओं एवं कला शिविरों में सृजित कलाकृतियों को न्यूनतम मूल्य पर जनसामान्य को अपने आवास की साज-सज्जा, पुरस्कार, उपहार एवं स्मृति स्वरूप प्रदान करने के लिए तथा कार्यालयों, अधिष्ठानों, प्रशिक्षण केन्द्रों, गेस्ट हाउसों में प्रदर्शित करने आदि हेतु प्रथम चरण में लगभग 320 कलाकृतियां सूचीबद्ध की गयी

सत्र 2019-20 का उत्तरार्थ कोविद-19 की वैश्विक महामारी के प्रसार के कारण बाधित हुआ। इस महामारी ने मानव जीवन के पारिवारिक सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक, सास्कृतिक एवं राजनीतिक जीवन में भयानक उथल-पुथल मचा दी। हम सब अपने-अपने जीवन को सुरक्षित रखने के लिए घरों में कैद होकर रह गए। कोविड-19 का अप्रत्याशित भय मानव जीवन को अवसाद के गर्त में धकेल दे इस बचाव के लिए राज्य ललित कला अकादमी उत्तर प्रदेश ने अखिल भारतीय स्तर पर तीन वर्षों में स्वतंत्र कलाकार सीनियर कलाकार एक जूनियर कलाकार के रूप में एक ऑनलाइन कला प्रतियोगिता का शुभारंभ किया। हुस प्रतियोगिता को सभी वर्गों में खूब सराहा गया तथा पूरे देश से हजारों प्रविष्टियां प्राप्त हुई है। उत्कृष्ट उपलब्धियो के लिए कलाकरो को अकादमी अधिष्ठाता से सम्मान वा लोककला के पुनरुद्धार और विकास को प्रोत्साहन किया गया। पारंपरिक कला और शिल्प तकनीकों के अध्ययन को बढ़ावा देना और स्वदेशी कारीगरों, चित्रकारों, और मूर्तिकारों को प्रोत्साहित करने के लिए सर्वेक्षणो का अयोजन करना शिक्षण और पुरस्कार के मानक के एकरूपता के लिये प्रयास किया।

निष्कर्ष

दृश्यकलाएँ सर्जकों के लिये भावाभिव्यक्ति और संप्रेषण का एक सशक्त माध्यम है। मानव के वनौकस अवस्था से अब तक कलाओं के विविध रूप कअकादमी ने इस चित्रकार शिविर में न सिर्फ राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति के वरिष्ठ कलाकारों को एक साथ लाकर कलाकारों की अभिव्यक्ति व उनके विचारों को साझा करने का सफल प्रयास किया है, बल्कि उन वरिष्ठ कलाकारों के साथ युवा कलाकारों को भी उनके साथ प्रतिभाग करने का जो अवसर प्रदान किया है, वह नवोदित कलाकारों के लिये उपयोगी सिद्धभी सहज-सरल रूप में तो कभी-कभी बहुत जटिल और गहन रूपाकारों में हमारे सम्मुख आते रहे हैं। सरलता व मौलिकता यद्यपि कला का वैशिष्ट्य है लेकिन आज की उपभोगितावादी संस्कृति के कारण समाज के बदलते परिवेश ने भी कला के स्वरूप और अभिव्यक्ति को अत्यधिक प्रभावित किया है। कला के पुरातन और वैविध्य स्वरूप की तुलना में अब कला में अनगिनत रूपाकार, नये-नये माध्यम और नवीन तकनीकों तथा अभिव्यक्ति के विषयों के चयन में अभिनव प्रयोग देखने को मिल रहे हैं। कोविड-19 की महामारी से सम्पूर्ण जनजीवन वर्ष 2020 में ठप-सा हो गया था। विश्वव्यापी कोरोना महामारी के दौर में इस त्रासदी की गम्भीरता को कम करने में भारत सफल रहा। कोरोना से इस जंग में सकारात्मक क्षण एवं जागरूकता अभियानों की अहम भूमिका रही है। स्टे होम एवं समय-समय पर निर्गत सरकार के दिशा निर्देशों के अनुरूप अपनी जीवनचर्या को अंगीकृत करते हुए, इस त्रासदी से लड़ने में प्रत्येक भारतवासी ने सहयोग दिया। कोरोना महामारी के संघर्ष में अनेक कर्मयोगी जनों द्वारा अपनी जान खतरे में डालकर मानव सेवा के नए आयम स्थापित किए, जैसे-डॉक्टरों/मेडिकल स्टाफ, प्रशासनिक अधिकारियों/पुलिस बल एवं सफाई कर्मचारियों ने दिन रात अपने दायित्वों को पूर्ण कर कोरोना योद्धा के रूप में एक मिशाल कायम की कोविड- 19 महामारी के उपप्रांत कलाकारों को प्रोत्साहन एवं आर्थिक सहयोग प्रदान करने के लिए संस्कृति विभाग से अधिनस्थ एकाई राज्य ललित कला अकादमी, उ.प्र. द्वारा विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन किया गया।। जिसने महामारी के दौरान कला को बढ़ावा देने के लिए ऑनलाइन माध्यमों का सक्रिय रूप से उपयोग किया।

अकादमी द्वारा विभिन्न संस्थानों को साथ जोड़कर कलात्मक क्रियाकलाप को संचलित किया गया, अकादमी ने इस चित्रकार शिविर में न सिर्फ राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति के वरिष्ठ कलाकारों को एक साथ लाकर कलाकारों की अभिव्यक्ति व उनके विचारों को साझा करने का सफल प्रयास किया है, बल्कि उन वरिष्ठ कलाकारों के साथ युवा कलाकारों को भी उनके साथ प्रतिभाग करने का जो अवसर प्रदान किया है, वह नवोदित कलाकारों के लिये उपयोगी सिद्ध हुआ।

राज्य ललितकला अकादमी, उत्तर प्रदेश ने कोरोना काल में एक 'सांस्कृतिक रक्षक' की भूमिका निभाई। अकादमी ने सिद्ध किया कि आपदा केवल बाधा नहीं, बल्कि नवाचार का अवसर भी हो सकती है। अकादमी द्वारा प्रदत्त यह मंच न केवल कलाकारों के लिए मानसिक संबल बना, बल्कि उत्तर प्रदेश की समृद्ध कला परंपरा को निरंतरता प्रदान करने में भी सफल रहा।

कोरोना काल में अकादमी और कलाकारों का संबंध केवल 'दाता और प्राप्तकर्ता' का नहीं था, बल्कि यह **सामूहिक जिजीविषा (Resilience)** का प्रमाण था। जब भौतिक दुनिया ठप थी, तब राज्य ललितकला अकादमी ने यह सुनिश्चित किया कि कलाकार का 'सृजन' न रुके। यह मंच इस बात का गवाह बना कि कला किसी भी आपदा से बड़ी होती है। अकादमी के इस मंच ने एक नई जिम्मेदारी भी तय की है। अब समय है कि इन डिजिटल प्रयोगों को केवल "आपातकालीन व्यवस्था" न मानकर एक **स्थायी इंफ्रास्ट्रक्चर** में बदला जाए। निष्कर्ष यह है कि यदि अकादमी इसी तरह तकनीक और लोक-कला के बीच सामंजस्य बिठाए रखे, तो उत्तर प्रदेश का कलाकार वैश्विक कला बाज़ार में अपनी एक स्वतंत्र और सशक्त पहचान बनाने में सफल होगा।

भविष्य में आवश्यकता इस बात की है कि अकादमी इन डिजिटल प्रयासों को स्थायी बनाए और एक 'ई-कॉमर्स आर्ट पोर्टल' जैसी व्यवस्था विकसित करे, ताकि कलाकारों को मंच के साथ-साथ बाज़ार भी उपलब्ध हो सके। संकट के उस

दौर में राज्य ललितकला अकादमी केवल एक सरकारी संस्था नहीं, बल्कि कलाकारों के लिए एक 'उम्मीद की खिड़की' साबित हुई। अकादमी ने यह साबित किया कि यदि नीयत साफ हो और दृष्टिकोण आधुनिक, तो बंद कमरों के भीतर से भी वैश्विक कला क्रांति की शुरुआत की जा सकती है।

कोरोना महामारी के दौरान ललित कला अकादमी द्वारा आयोजित विभिन्न कला कार्यशालाओ में निर्मित कलाकृतियाँ

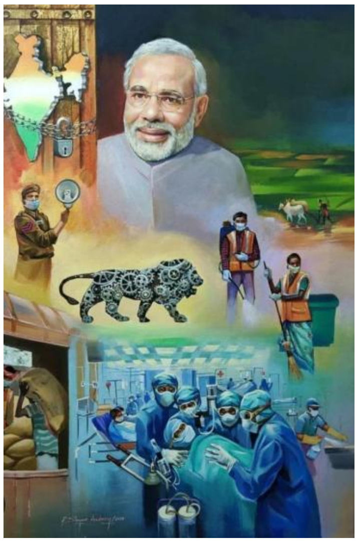

संदर्भ ग्रंथ

- https://statelalitkalaacademyup.org/introduction.aspx
- https://www.researchgate.net/publication/365790255Art_management_during the_COVID-19_pandemic_visual_arts_creator_perspective-Michał Szostak
- https://www.research.ed.ac.uk/en/publications/the-role-of-the-arts-during-the-covid 19-pandemic-Alexandra Bradbury, Katey Warran
- https://rupkatha.com/rioc1s1n2/Art in the Digital during and after Covid: Aura and Apparatus of Online Exhibitions-João Pedro Amorim1 & Luís Teixeira2
- https://so04.tci-thaijo.org/index.php/JUCR/article/view/252270Binson, Bussakorn. 2021. “Online Art Projects During COVID - 19”. Journal of UrbanCultureResearch22(June):4-5.
- https://upculture.up.nic.in/hi/lalaita-kalaa-akaadamai
- statelalitkalaacademyupAnnual art exhibition3/ Arts Magazine'2019-20
- All India Photography Exhibition 2021/Corona Warriors/catalogue
- State Lalit Kala Akademi up/75 Azadi Ka Amrit Mahotsav/catalogue

ISARA INSTITUTE OF MANAGEMENT & PROFESSIONAL STUDIES

RESEARCH GATEWAY

AROGYAM ONLINE

PARIVARTAN PSYCHOLOGY CENTER

भारतीय भाषा, शिक्षा, साहित्य एवं शोध

ISSN 2321 – 9726

WWW.BHARTIYASHODH.COM

INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF MANAGEMENT SCIENCE & TECHNOLOGY

ISSN – 2250 – 1959 (0) 2348 – 9367 (P)

WWW.IRJMST.COM

INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF COMMERCE, ARTS AND SCIENCE

ISSN 2319 – 9202

WWW.CASIRJ.COM

INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF MANAGEMENT SOCIOLOGY & HUMANITIES

ISSN 2277 – 9809 (0) 2348 - 9359 (P)

WWW.IRJMSH.COM

INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF SCIENCE ENGINEERING AND TECHNOLOGY

ISSN 2454-3195 (online)

WWW.RJSET.COM

INTEGRATED RESEARCH JOURNAL OF MANAGEMENT, SCIENCE AND INNOVATION

ISSN 2582-5445

WWW.IRJMSI.COM

JOURNAL OF LEGAL STUDIES,POLITICS AND ECONOMICS RESEARCH

WWW.JLPER.COM